शुभ प्रभात बच्चों,

पिछली कक्षा में दी गई कहानी का आपने पठन पाठन निश्चित तौर पर कर लिया होगा। आज हम उसके शेष भाग को पूरा करेंगे जो निम्नांकित है।

पिता ने पुत्र को सुधारने के लिए उनका विवाह सुलक्षणी नामक कन्या से कर दिया। उनके श्रीचंद और लक्ष्मीचंद नाम के दो पुत्र हुए। परंतु नानक का मन गृहस्थी में न लगा। वे जो कुछ कमाते थे, दीन-दुखियों में बाँट देते थे। उनकी पत्नी ने उन्हें बहुत समझाया, लेकिन नानक पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने घर-बार छोड़ दिया। वे घूम-घूमकर उपदेश देते थे। उनके उपदेशों का सार था- "ईश्वर एक है। हम सबको उसी ने बनाया है। हिंदू-मुसलमान सब उसी की संताने हैं। उसकी दृष्टि में सभी समान हैं। अच्छे काम करने से

ही वह प्रसन्न होते हैं।"वे धीरे-धीरे 'गुरु नानक के नाम से प्रसिद्ध हो गए। नानक के मुख्य शिष्य थे-बाला और मरदाना। अपने शिष्यों के साथ उन्होंने तीन बार भारत के प्रसिद्ध स्थानों की यात्रा की। एक बार वे घूमते-घूमते बगदाद पहुँचे । वहाँ के शासक ने गरीबों को सताकर बहुत धन इकट्ठा किया था। नानक ने उसकी आँखें खोलनी चाही।वे बहुत से कंकड़-पत्थर एकत्रित कर उसके महल के पास बैठ गए। अगले दिन शासक उधर से जा रहा था। उसने नानक से पूछा, “यह सब क्या है?"नानक ने उत्तर दिया-“मैंने सुना है कि

आपने बहुत-सा धन इकट्ठा किया है और मरने पर आप उसे साथ ले जाएँगे। अतः मैं भी इन्हें ले जाऊँगा।" इस उत्तर का शासक के हृदय पर बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने तुरंत सारा धन गरीबों में बाँट दिया और नानक का भक्त हो गया।गुरु नानक के बनाए गए अनेक भजन अब तक गाए जाते हैं। वे सब एक पुस्तक में संगृहित हैं, जो गुरुग्रंथ साहब' के नाम से मशहूर है। यह सिक्खों का धार्मिक ग्रंथ है। सिक्ख इसका पाठ करते हैं। यह ग्रंथ सदाचार का पाठ सिखाता है। सन् 1538 ई0 में

करतारपुर (पंजाब) में नानक का स्वर्गवास हुआ। उनके पश्चात उनका शिष्य लहना उनकी गद्दी पर बैठा। आगे चलकर लहना ही गुरु अंगद के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

<u>शब्दार्थ</u>

सदाचार-अच्छा व्यवहार

इकट्ठा-एकत्रित करना

प्रभाव- असर

मार्गदर्शन-रास्ता दिखाना

दीन-गरीब

टोली- दल

भजन-ईश्वर की प्रार्थना में गाए जाने वाले गीत

संग्रहित -सुरक्षित रूप से एकत्रित करना

आँखें खोलना- सही रास्ता दिखाना

गृहकार्य

दी गई अध्ययन सामग्री (शब्दार्थ) को अपनी पुस्तिका में लिखें और उसे कंठस्थ भी करे। सिर्फ लिखकर ही पुस्तिका में सुशोभित ना होने दें।

आज के लिए यही तक शेष कल के अध्ययन सामग्री में।